Syllabus

Ph.D.

Sanskrit

2022-23

Department of Sanskrit

Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya,Sagar (M.P.)

[A Central University]

निर्देश :

1. पाठ्यक्रम का नाम –Ph.D.
2. पाठ्यक्रम की संरचना
   - (a) कोर प्रश्नपत्रों की संख्या –03
   - (b) विद्यार्थी द्वारा चुने गये ऐच्छिक प्रश्नपत्रों की न्यूनतम संख्या = 01
3. क्रेडिट संख्या –

(a)	कोर प्रश्नपत्र = 03 प्रश्नपत्र X 04 क्रेडिट	= 12 क्रेडिट
(b)	कोर प्रश्नपत्र = 01 प्रश्नपत्र X 02 क्रेडिट	= 02 क्रेडिट
(c)	ऐच्छिक प्रश्नपत्र = 01 प्रश्नपत्र X 02 क्रेडिट	= 02 क्रेडिट

———————————————— कुल = 16 क्रेडिट

4. प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंकों का होगा।
5. सभी प्रश्नपत्र पांच इकाईयों में विभक्त होंगे।
6. इकाईयों में से यथायोग्य व्याख्यात्मक, दीर्घ एवं लघु प्रश्न पूछे जाएंगे।
7. अंक विभाजन

मिड सेमेस्टर	–	20 अंक
आन्तरिक आकलन	–	20 अंक
सतत मूल्याकन	–	20 +20 = 40 अंक
सत्रान्त परीक्षा	–	60 अंक
प्रत्येक प्रश्नपत्र के कुल अंक	–	100 अंक

8. प्रदत्त कार्य का मूल्यांकन, प्रस्तुति –15अंक
   उपस्थिति –05अंक
   उपस्थिति के लिए अंक निम्नलिखित अनुसार होंगे –

i.	75% और न्यून.	: 00 अंक
ii.	> 75% और 80% तक	: 01 अंक
iii.	> 80% और 85% तक	: 02 अंक
iv.	> 85% और 90% तक	: 03 अंक
v.	> 90% और 95% तक	: 04 अंक
vi.	> 95%	: 05 अंक

10. सत्रान्त परीक्षा देने की पात्रता के लिए विद्यार्थियों की मिड सेमेस्टर परीक्षा तथा आन्तरिक आकलन में उपस्थिति अनिवार्य हैं।
11. 75% से कम उपस्थिति होने पर विद्यार्थियों को परीक्षा में सम्मिलित होने की पात्रता नहीं होगी।
12. कोर्स वर्क एक सेमेस्टर का होगा।

13. **समवर्गी एवं सम्बद्ध विषय**– वेद, वेदांग, ज्योतिष, सिद्धान्त ज्योतिष, नव्यव्याकरण, व्याकरण, मीमांसा, नव्यन्याय, सांख्य योग, तुलनात्मक दर्शन, शुक्लयजुर्वेद, मध्ववेदान्त, धर्मशास्त्र, साहित्य, पुराणेतिहास, आगम

Ph.D. I Sem. Sanskrit

Course	Code	Paper Title	L	T	P	C
SAN-CC	141	शोध प्रविधि	4	0	0	4
SAN-CC	142	पाण्डुलिपिविज्ञान	4	0	0	4
SAN-CC	143	साहित्य समीक्षा	-	-	-	4
SAN-EC	141	साहित्य एवं साहित्यशास्त्र	2	0	0	2
SAN-EC	142	वेद–वेदाङ्ग	2	0	0	2
RPE-CC-	141	Research and Publication Ethics	1	0	1	2
						16

Ph.D. I-Sem. Sanskrit	SAN - CC – 141 शोध–प्रविधि			
कुल अध्ययन काल खण्ड/व्याख्यान– 60 4 व्याख्यान ×15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	L 4	T 0	P 0	C 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य : और परिणाम :

यह पाठ्यक्रम शोध को गुणवत्तापूर्ण तथा गवेषणापूर्ण बनाने के लिये अत्यन्त उपादेय है। इसके अन्तर्गत दर्शन, नीतिशास्त्र तथा वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का ज्ञान कराते हुये **शोध** को नैतिक रूप से मौलिकता प्रदान करने की अर्हता दी जाती है। **शोध ही साहित्य आलोचना का मेरुदंड माना जाता है |इसके अंतर्गत शोध प्राविधि के विविध पक्षों से शोधार्थी अवगत होगें तथा विद्यार्थी शोध के आयाम से परिचित होगें और उनके अन्दर शोध के प्रति जिज्ञाशा उत्पन्न होगी |**

इकाई 1 शोध की अवधरणा, शाध की प्रकृति एवं व्याप्ति, शोध का महत्त्व, शोध की गुणात्मकता, अनुसंधन एवं समालोचना, शोधर्थी एवं शोध निर्देशक की पात्राता, शोध प्रक्रिया : शोध विषय का निर्धरण, शोध विषय की परिकल्पना, शोध सामग्री का संकलन एवं संयोजन, शोध सामग्री का वर्गीकरण एवं विश्लेषण।(L-12)

इकाई 2 शोध में तथ्यों की खोज और व्याख्या का महत्त्व, शोध प्रपत्रा – विशेषताएँ और प्रारूप, कार्यशाला, संगोष्ठी, सम्मेलन एवं परिसंवाद का शोध में महत्त्व।शोध प्रबंध लेखन – शोध प्रबंध का रूपबंध, शोध प्रबंध में अध्याय और अनुच्छेद, संदर्भ – लेखन, उद्धरणलेखन, पादटिप्पणी लेखन, शोध प्रबंध की अंतिम रूप रचना।(L-12)

इकाई 3 शोधप्रविधियाँ : वर्णनात्मक/विश्लेषणात्मक पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, अन्तरानुशासित पद्धति, क्षेत्रा पद्धति, तुलनात्मक पद्धति, अनुवाद की भूमिका।
क्षेत्रा सर्वेक्षण : क्षेत्रा सर्वेक्षण की आवश्यकता और उपयोगिता, प्रश्नावली निर्माण, साक्षात्कार, पर्यवेक्षण।(L-12)

इकाई 4 संस्कृत शोध विषयक सन्दर्भ ग्रन्थ, कोष ग्रन्थ, विश्वकोष, ग्रन्थ सूचियाँ, परिशिष्ट शब्दानुक्रमणिकाएँ, हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थों की सूचियाँ, शोध

पत्रिाकाएँ। (L-12)

इकाई 5 शोध में कम्प्यूटर की भूमिका, कम्प्यूटर की आधरभूत संरचना, आपरेटिव सिस्टम्स, पावर पाईण्ट का परिचय एवं प्रयोग, इण्टरनेट एवं ई–मेल का परिचय एवं प्रयोग।(L-12)

नोट - समीक्षात्मक प्रश्न की दृष्टी से अध्ययन आवश्यक है

मूलग्रन्थ :–

1. अनुसंधन के मूल तत्त्व – डॉ. उदयभानु सिंह
2. शोधप्रविधि– डॉ. विनयमोहन शर्मा
3. शोध प्रक्रिया और विवरणिका – डॉ. सरनाम सिंह शर्मा
4. साहित्य एवं शोध : कुछ समस्याएँ – डॉ. देवराज उपाध्याय
5. अनुसन्धन का स्वरूप – डॉ. सावित्राी सिन्हा
6. शोध और सिद्धांत – नगेन्द्र
7. अनुसंधन की प्रविधि और प्रक्रिया – राजेन्द्र मिश्र

सहायकग्रन्थ :–

1. अनुसन्धन का विवेचन – डॉ. उदयभानु सिंह
2. न्यू केटोलागस केटोलोगारम् : भूमिका – डॉ. वी. राघवन्
3. संस्कृत शिक्षानुशीलन – डॉ. गौरीशंकर
4. अनुसन्धन प्रविधि सिद्धान्त और प्रक्रिया – एस. एन. गणेशन्
5. साहित्यिक अनुसंधन के प्रतिमान – देवराज उपाध्याय
6. अनुसंधन की प्रक्रिया – डॉ. सावित्राी सिन्हा, विजयेन्द्र स्नातक
7. शोधप्रविधि– रामगोपाल शर्मा

8- The Art of Literary Research - R.D. Altic
9- Introduction to Research - T. Helway

Ph.D. I-Sem. Sanskrit	SAN - CC – 142 पाण्डुलिपिविज्ञान
कुल अध्ययन काल खण्ड/व्याख्यान– 60 4 व्याख्यान ×15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	L T P C 4 0 0 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य : और परिणाम :

संस्कृत एवं अन्य भाषाओं के प्राचीन ग्रन्थों के अध्ययन के लिए पाण्डुलिपि का ज्ञान अति आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र पाण्डुलिपि के विषय में विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। पाण्डुलिपियों का परिचय, महत्त्व एवं उनका संरक्षण करने की जानकारी उन्हें हो सकेगी। पाण्डुलिपि की रचना प्रक्रिया और उसके घटकों की जानकारी इसके अध्ययन से प्राप्त होगी। प्रमुख लिपियों का परिचय इसके अध्ययन से हो सकेगा। पाण्डुलिपियों के सम्पादन की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया एवं उससे संबंधी आवश्यक ज्ञान इसके अध्ययन से होगा। पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों एवं संस्थाओं और उनके कार्यों की जानकारी भी इससे मिलेगी। इससे विद्यार्थियों में विषयगत परिचर्चा का व्यवहार विकसित होगा।

इकाई 1 पाण्डुलिपि विज्ञान – परिचय एवं महत्त्व, पाण्डुलिपि – स्वरूप, इतिहास, महत्त्व, भाण्डागार (L-12)

इकाई 2 पाण्डुलिपि ग्रन्थ रचना प्रक्रियाः
पाण्डुलिपि – भौतिक सामग्री, स्वरूप और आकृति, पारिभाषिक शब्दावली (L-12)

इकाई 3 पाण्डुलिपि सम्पादन प्रक्रिया– पाठालोचन, लिप्यन्तरण (L-12)

इकाई 4 प्राचीन पाण्डुलिपियाँ तथा राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (L-12)

इकाई 5 लिपि परिचय एवं अभ्यास (L-12)

नोट - समीक्षात्मक प्रश्न की दृष्टी से अध्ययन आवश्यक है

मूलग्रन्थ :–

1. पाठालोचन : सिद्धान्त और प्रक्रिया – मिथिलेश कत्रो
2. पाण्डुलिपि विज्ञान – रामगोपाल शर्मा ‘दिनेश’
3. पाण्डुलिपिविज्ञान – डॉ. सत्येन्द्र
4. पाठानुसंधन – डॉ. सियाराम तिवारी
5. भारतीय पाठालोचन की भूमिका – डॉ. एम. एम. कात्रो

सहायकग्रन्थ :–

1. प्राचीन लिपिमाला – डॉ. गौरीशडकर हीराचन्द्र ओझा
2. पाण्डुलिपि परिचय – डॉ. अयोध्याचन्द्र दाश
3. अक्षरमाला – गुणाकर मुले
4. शोधप्रविधि तथा पाण्डुलिपि विज्ञान – प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

Ph.D. I-Sem. Sanskrit	SAN - CC – 143 साहित्य समीक्षा
कुल अध्ययन काल खण्ड– 60 घण्टे 4 ×15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	L T P C 4 0 0 4

पाठ्यक्रम उद्देश्य : और परिणाम :

शोधार्थियों के कोर्सवर्क में प्रस्तावित इस पाठ्यक्रम के माध्यम से शोधार्थियों में समीक्षा करने की दृष्टि विकसित होगी। समीक्षा करने के उद्देश्य से अनेक ग्रन्थों को पढ़ने का सुअवसर उन्हें प्राप्त होगा तथा ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ शोधार्थियों को शोध के नये आयाम प्राप्त होगें। साहित्य में समीक्षात्मक दृष्टि से शोधार्थियों में कुछ नया शोध करने की प्रवृत्ति भी जागृत होगी।

- साहित्य समीक्षा के अन्तर्गत साहित्य, आलोचना, वैदिक, लौकिक, साहित्य के साथ साहित्य एवं संस्कृति से सम्बन्धो अन्य विषय क्षेत्र, जिन पर विद्यार्थी के शोध विषय आवंटित होगे, उसके अनुरूप एवं उससे सम्बन्धित शोध, रिपोर्ट तथा पुस्तकों की समीक्षा होगी, जिससे उसके शोध एवं ज्ञान में गुणात्मक वृद्धि हागी।
- शोधार्थी को लगभग 3000 शब्दा का एक प्रपत्र लिखकर, प्रस्तुतीकरण कर जमा करना होगा।

मूलग्रन्थ :–

आवण्टित विषय से सम्बन्धित ग्रन्थ

सहायकग्रन्थ :–

1. वैदिकसाहित्य का इतिहास, डॉ. पारस नाथ द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
2. वैदिकसाहित्य का इतिहास, प्रो. राममूर्ति शर्मा, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 1986
3. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, वाराणसी
5. संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, प्रो. रामजी उपाध्याय चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन दिल्ली

Ph.D. I-Sem. Sanskrit	SAN - EC– 141 **साहित्य एवं साहित्यशास्त्र**
कुल अध्ययन काल खण्ड/व्याख्यान– 60 4 व्याख्यान ×15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	**L T P C** **4 0 0 4**

पाठ्यक्रम उद्देश्य : और परिणाम :

इस पाठ्यक्रम के द्वारा पीएच.डी- कोर्स वर्क के विद्यार्थियों को लोकिक संस्कृत साहित्य एवं वैदिक साहित्य का विशेष परिचय प्राप्त होगा । तथा आधुनिक संस्कृत के रूप में लहरी दशकम् और अन्यच्च के द्वारा लेखन का महत्त्व ज्ञापित होगा। आधुनिक काव्यशास्त्र के रूप प्रो. अभिराजराजेन्द्र मिश्र कृत अभिराज यशोभूषणम् का अध्ययन होगा जो प्राचीन आचार्यो से लेकर आधुनिक सिध्दांतों का प्रस्तोता ग्रन्थ है। छः सम्प्रदाय साहित्यशास्त्र के प्राण है उन्हें भी विद्यार्थी जान सकेंगे! पं. राज जगन्नाथ प्रणीत रसगंगाधर के काव्यलक्षण, काव्यहेतु, काव्यभेद आदि का ज्ञान होगा और विद्यार्थियों में विषयगत परिचर्चा की शैली विकसित होगी

इकाई 1 लौकिक संस्कृत साहित्य के प्रमुख इतिहास ग्रंथों का अध्ययन(L-12)

इकाई 2 आधुनिक संस्कृत साहित्य ;लहरी दशकम् तथा अन्यच्चद्ध(L-12)

इकाई 3 अभिराजयशोभूषणम्(L-12)

इकाई 4 साहित्यशास्त्रा के प्रमुख ग्रन्थ, चिन्तक एवं सिद्धान्त ;छः सम्प्रदायद्ध (L-12)

इकाई 5 रसगधैंधर, प्रथम आनन ;रसनिरूपणान्तद्ध (L-12)

नोटव्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न की दृष्टी से अध्ययन आवश्यक है -

मूलग्रन्थ –

1. अन्यच्च, प्रो. राधवल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत भारती, नई दिल्ली, 2011
2. अभिराजयशोभूषणम्, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 2006 ई.
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास– पं. बलदेव उपाध्याय।
4. संस्कृत साहित्य का प्रामाणिक इतिहास– डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी।
5. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास– डॉ. राधवल्लभ त्रिपाठी।
6. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास– डॉ. कपिलदेव द्विवेदी।

7. भारतीय काव्य सिद्धांत–संपादक डॉ. नगेन्द्र।

सहायकग्रन्थ :–

1. वागीश्वरीकण्ठसूत्राम्/ डॉ. हर्षदेव माध्व/ सं. डॉ. प्रवीण पण्ड्या/ रा.सं.सं. नई दिल्ली/ 2011
2. और पिफर, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2017
3. आधुनिक संस्कृत काव्यशास्त्रा,डॉ. आनन्द कुमार श्रीवास्तव।
4. संस्कृत आलोचना,पं. बलदेव उपाध्याय।
5. नाट्यशास्त्रा का इतिहास– डॉ. पारसनाथ द्विवेदी,चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
6. भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्रा;भरत मुनि के नाट्यसिद्धान्तों का सांगोपांग विवेचनद्ध–कुमारी गोदावरी वासुदेव केतकर, परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली।
7. नाट्यशास्त्राीय मूल तत्त्वों की विकास परम्परा–प्रो.कुसुम भूरिया दत्ता, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली।
8. अठारहवी शती के संस्कृत रूपक – बी. एल. नागार्च, पब्लिकेशन स्कीम जयपुर।
9. आधुनिक संस्कृत नाटक – रामजी उपाध्याय, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी
10. संस्कृत साहित्य का इतिहास– पी.बी. काणे।
11. संस्कृत साहित्य का इतिहास– वाचस्पति गैरोला।
12. भारतीय काव्यशास्त्रा – भगीरथ मिश्र।

Ph.D. I-Sem. **Sanskrit**	**SAN - EC– 142** **वेद–वेदाङ्ग**
कुल अध्ययन काल खण्ड/व्याख्यान– 60 4 व्याख्यान ×15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	**L T P C** **4 0 0 4**

पाठ्यक्रम उद्देश्य : और परिणाम :

संस्कृत का शोध की दृष्टी विशेष महत्व है | उसमे भी वैदिक साहित्य और व्याकरण का अध्ययन आवश्यक है |वेद विश्व भर में भारत की अद्वितीय पहचान हैं। इन्हें ज्ञान का भण्डार माना जाता है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र वैदिक साहित्य से परिचित हो सकेंगे। ऋग्वेद के प्रमुख सूक्तों के अध्ययन से वे वैदिक देवताओं इन्द्र आदि की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। दार्शनिक सूक्तों का विशेष महत्त्व है। वे बाद की दार्शनिक परम्पराओं के बीज रूपा माने जाते हैं। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र दार्शनिक सूक्तों का ज्ञान प्राप्त करेंगे। यजुर्वेद और अथर्ववेद के सूक्तों के अध्ययन से वे इनकी विषय वस्तु से परिचित हो सकेंगे। वेदांगों का ज्ञान वेदों को समझने के लिए आवश्यक माना जाता है। निरुक्त और पाणिनिय शिक्षा के अध्ययन से छात्र इन वेदांगों के तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करेंगे। यह ज्ञान वेद के मर्म को समझने में सहायक होता है। वेद और व्याकरण ही संस्कृत की पूजी है | इसके अध्ययन से शोधार्थी वेद और व्याकरण से परिचत होगें| इससे विद्यार्थियों में विषयगत परिचर्चा का व्यवहार विकसित होगा।

इकाई 1 वैदिकसाहित्य का इतिहास(L-12)

इकाई 2 वेदाधैं का सामान्य अध्ययन(L-12)

इकाई 3 वैदिक चिन्तन पद्धति प्राचीन एवं अर्वाचीन ;समीक्षकों के विशेष सन्दर्भ में)(L-12)

इकाई 4 पाणिनि, कात्यायन तथा पत× जलि का व्याकरणशास्त्रा को योगदान(L-12)

इकाई 5 वाक्यपदीयम् ;ब्रह्मकाण्डद्ध(L-12)

Ph.D. I-Sem. Sanskrit	RPE - CC– 141 **Research and Publication Ethics**
कुल अध्ययन काल खण्ड/व्याख्यान–30 2 व्याख्यान ×15 सप्ताह प्रति सेमस्टर	**L T P C** **1 0 1 2**

मूल ग्रन्थ –

1. वैदिक साहित्य का इतिहास, राममूर्ति शर्मा
2. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, आचार्य बलदेव उपाध्याय
3. वैदिक साहित्य और संस्कृति, कपिलदेव द्विवेदी
4. वैदिक साहित्य और संस्कृति का स्वरूप तथा विकास, ओमप्रकाश पाण्डेय
5. संस्कृत व्याकरण शास्त्रा का इतिहास, पं. युधिष्ठिर मीमांसक
6. महाभाष्य का सांस्कृतिक अध्ययन, प्रभुदयाल अग्निहोत्राी
7. वाक्यपदीयम्, भर्तृहरि

सहायकग्रन्थ :–

1. वैदिक अध्ययन(शोध), कृष्णलाल
2. शिक्षासंग्रह , रामप्रसाद त्रिपाठी
3. छन्दशास्त्रा का उद्भव एवं विकास, श्रीकिशोर मिश्र
4. ऋग्वेद का श्रीमद्भागवत पर प्रभाव, शीतांशु त्रिपाठी
5. ऋग्वेदकालीन आचार, डॉ. रामजी उपाध्याय
6. ऐतरेयब्राह्मण का सांस्कृतिक अध्ययन, डॉ. जे. बी. सिंह
7. वैदिक चिन्तन, स्वामी विवेकानन्द
8. संस्कृतकाव्येषु वैदिकचिन्तनस्य प्रभावः,
9. वाजसनेयिसंहिता तथा तैत्तिरीय संहिता का तुलनात्मक अध्ययन, केशवप्रसाद मिश्र
10. ऋग्वेद द्वितीय मण्डल पर सायण भाष्य और अन्य व्याख्याओं का समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन, सिद्धनाथ शुक्ल

Part A Theory

UNIT-I PHILOSOPHY, ETHICS AND SCIENTIFIC CONDUCT : (08 Hrs)

- Introduction to philosophy: definition, nature and scope, concept, branches.
- Ethics: definition, moral philosophy, nature of moral judgments and reactions.
- Ethics with respect to science and research.

- Intellectual honesty and research integrity.
- Scientific misconducts: Falsification, Fabrication, and Plagiarism (FFP)
- Redundant publications: duplicate and overlapping publications, salami slicing.
- Selective reporting and misrepresentation of data.

UNIT-II PUBLICATION ETHICS (07 Hrs)

- Publication ethics: definition, introduction and importance.
- Best practices / standards setting initiatives and guidelines: COPE, WAME, etc.
- Conflicts of interest.
- Publication misconduct: definition, concept, problems that lead to unethical behavior and vice versa, types.
- Violation of publication ethics, authorship and contributor-ship.
- Identification of publication misconduct, complaints and appeals.
- Predatory publishers and journals PRACTICE.

Part: B- Practicum

UNIT-III OPEN ACCESS PUBLISHING (04 Hrs)

- Open access publications and initiatives.
- SHERPA/ROMEO online resource to check publisher copyright & self-archiving policies.
- Software tool to identify predatory publications developed by SPPU.
- Journal finder/journal suggestion tools viz JANE, Elsevier Journal Finder, Springer Journal Suggester, etc.

UNIT-IV PUBLICATION MISCONDUCT (04 Hrs)

A. Group Discussions (02 Hrs)

- Subject specificethical issues, FFP.Authorship.
- Conflicts of interest.

- Complaints and appeals: examples and fraud from India and abroad.

B. Software tools (02 Hrs)

- Use of plagiarism softwarelike Turnitin, Urkund and other open source Software tools.

UNIT-V DATABASES AND RESEARCH METRICS

A. Databases (04HRS).

- Indexing databases
- Citation databases: Web of Science, Scopus, etc

B. Research Metrics (03 Hrs)

- Impact Factor of journal as per Journal Citation Report, SNIP. SIR, IPP. Cite Score.
- Metrics: h index, g index, i10 index, altmetrics.

Suggested Readings –

1. The Ethics of Teaching and Scientific Research By Miro Todorovich; Paul Kurtz; Sidney Hook,
2. Research Ethics: A Psychological Approach By Barbara H. Stanley, Joan E. Sieber, Gary B.Melton
3. Research Methods in Applied Settings: An Integrated Approach to Design and Analysis By Jeffrey A. Gliner: George A. Morgan Lawrence Erlbaum Associates, 2000
4. Ethics and Values in Industrial-Organizational Psychology By Joel Lefkowitz Lawrence, Erlbaum Associates, 2003
5. Beall, J. (2012), Predatory publishers are corrupting open access. Nature, 489(7415), 179 179. https://doi.org/10.1038/489179a
6. Bird, A. (2006). Philosophy of Science. Routledge.

7. Chaddah, P. (2018). Ethics in Competitive Research: Do not get scooped, do not get plagiarized. ISBN: 978-938748086
8. Macintyre, Alasdair (1967). A Short History of Ethics. London.
9. National Academy of Sciences, National Academy of Engineering and Institute of Medicine (2009). On Being a Scientist: A Guide.to Responsible Conduct in Reseorch: Third Edition. National Academies Press.